सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन: भाग I

सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन क्या हैं?

- 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारतीय समाज जाति आधारित, पतनशील और प्रतिगामी था।
- यहाँ कुछ प्रथाओं का पालन किया जाता था जो मानवीय भावनाओं या मूल्यों के अनुरूप नहीं थे, लेकिन फिर भी धर्म के नाम पर उनका पालन किया जा रहा था।
- कुछ प्रबुद्ध भारतीयों जैसे- राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद विद्यासागर, दयानंद सरस्वती और कई अन्य ने समाज में सुधार लाना शुरू किया ताकि पश्चिमी की चुनौतियों का सामना किया जा सके।
- सुधार आंदोलनों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:
    - **सुधारवादी आंदोलन जैसे- ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, अलीगढ़ आंदोलन।**
    - **आर्य समाज और देवबंद आंदोलन जैसे- पुनरुत्थानवादी आंदोलन।**
- सुधारवादी और पुनरुत्थानवादी आंदोलन अलग-अलग स्तर पर धर्म की खोई हुई शुद्धता की अपील पर निर्भर थे, जिसे वे सुधारना चाहते थे।
- एक-दूसरे सुधार आंदोलन के बीच एकमात्र अंतर यह था कि यह किस हद तक परंपरा या तर्क और विवेक पर निर्भर था।

वे कौन से कारक हैं जिन्होंने सुधार आंदोलनों को जन्म दिया?

- **भारतीय धरती पर औपनिवेशिक सरकार की उपस्थिति:** जब अंग्रेज़ भारत आए तो उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा के साथ-साथ कुछ आधुनिक विचारों को भी पेश किया।
    - ये विचार स्वतंत्रता, सामाजिक और आर्थिक समानता, बंधुत्व, लोकतंत्र व न्याय थे जिनका भारतीय समाज पर ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा।
- **धार्मिक और सामाजिक कुरीतियाँ:** उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक रूढ़िवाद के एक दुष्चक्र में फँस गया था।
- **महिलाओं की निराशाजनक स्थिति:** सबसे अधिक चिंताजनक स्थिति महिलाओं की थी।
    - जन्म के समय कन्या शिशुओं की हत्या प्रथा प्रचलित थी।
    - समाज में बाल विवाह की प्रथा थी।
    - बहुविवाह की प्रथा देश के कई हिस्सों में प्रचलित थी।
    - विधवा पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी और सती प्रथा बड़े पैमाने पर प्रचलित थी।
- **शिक्षा का प्रसार और विश्व में जागरूकता बढ़ी:** 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से कई यूरोपीय और भारतीय विद्वानों ने प्राचीन भारत के इतिहास, दर्शन, विज्ञान, धर्म और साहित्य का अध्ययन करना शुरू किया।
    - भारत के अतीत के गौरव के प्रति बढ़ते ज्ञान ने भारतीय लोगों में अपनी सभ्यता पर गर्व की भावना पैदा की।
    - इसने सभी प्रकार की अमानवीय प्रथाओं, अंधविश्वासों आदि के खिलाफ धार्मिक और सामाजिक सुधार के लिये संघर्ष में इन सुधारकों की मदद की।
- **बाहरी दुनिया के बारे में जागरूकता:** उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों के दौरान राष्ट्रवाद और लोकतंत्र का बढ़ता ज्वार भारतीय सामाजिक संस्थानों और धार्मिक दृष्टिकोण में सुधार के रूप में अभिव्यक्त हुआ।
    - राष्ट्रवादी भावनाओं में वृद्धि, नई आर्थिक ताकतों का उदय, शिक्षा का प्रसार, आधुनिक पश्चिमी विचारों और संस्कृति के प्रभाव तथा दुनिया में बढ़ती जागरूकता जैसे- कारकों ने सुधार के संकल्प को मज़बूती प्रदान की।

ब्रह्म समाज आंदोलन क्या था?

- राजा राम मोहन राय ने वर्ष 1828 में ब्रह्म सभा की स्थापना की, जिसे बाद में ब्रह्म समाज का नाम दिया गया।
- इसका मुख्य उद्देश्य शाश्वत भगवान की पूजा करना था। यह पुरोहिती, कर्मकांडों और बलिदानों के विरुद्ध था।
- यह प्रार्थना, ध्यान और शास्त्रों के पढ़ने पर केंद्रित था। यह सभी धर्मों की एकता में विश्वास करता था।
- यह आधुनिक भारत में पहला बौद्धिक सुधार आंदोलन था। इससे भारत में तर्कवाद और ज्ञान का उदय हुआ जिसने परोक्ष रूप से राष्ट्रवादी आंदोलन में योगदान दिया।
- यह आधुनिक भारत के सभी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आंदोलनों का अग्रदूत बना। वर्ष 1866 में यह दो भागों में विभाजित हो गया, अर्थात् केशव चंद्र सेन के नेतृत्व में भारत का ब्रह्म समाज और देवेंद्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में आदि ब्रह्म समाज।
- **प्रमुख नेता: देबेंद्रनाथ टैगोर, केशव चंद्र सेन, पं. शिवनाथ शास्त्री और रवींद्रनाथ टैगोर।**
- देवेंद्र नाथ टैगोर ने तत्त्वबोधिनी सभा (वर्ष 1839 में स्थापित) का नेतृत्व किया, जो बांग्ला में अपने अंग तत्त्वबोधिनी पत्रिका के तर्कसंगत

दृष्टिकोण के साथ भारत के अतीत के व्यवस्थित अध्ययन और राम मोहन राय के विचारों के प्रचार के लिये समर्पित थी।
- राम मोहन राय को अपने प्रगतिशील विचारों के कारण राधाकांत देब जैसे रूढ़िवादी तत्वों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा जिन्होंने ब्रह्म समाज के प्रचार का मुकाबला करने के लिये धर्म सभा का आयोजन किया।

प्रार्थना समाज क्या था?

- तर्कसंगत पूजा और सामाजिक सुधार के उद्देश्य से वर्ष 1876 में डॉ. आत्मा राम पांडुरंग द्वारा बॉम्बे में प्रार्थना समाज की स्थापना की गई थी।
- इस समाज के दो महान सदस्य- आर.सी. भंडारकर और न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे थे।
- उन्होंने खुद को सामाजिक सुधार के काम के लिये समर्पित कर दिया जैसे कि अंतर्जातीय भोजन, अंतर्जातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं एवं दलित वर्गों की स्थिति में सुधार।
- प्रार्थना समाज का चार सूत्री सामाजिक एजेंडा था:
    - जाति व्यवस्था की अस्वीकृति
    - महिला शिक्षा
    - विधवा पुनर्विवाह
    - पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिये शादी की उम्र बढ़ाना
- महादेव गोविंद रानाडे विधवा पुनर्विवाह संघ (वर्ष 1861) और डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी के संस्थापक थे।
- उन्होंने पूना सार्वजनिक सभा की भी स्थापना की।
- रानाडे के लिये धार्मिक सुधार सामाजिक सुधार से अविभाज्य था।
- उनका यह भी मानना था कि यदि धार्मिक विचार कठोर होते तो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में कोई सफलता नहीं मिलती।
- यद्यपि प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज के विचारों से शक्तिशाली रूप से प्रभावित था, इसने मूर्ति पूजा के बहिष्कार और जाति व्यवस्था समाप्त करने पर अत्यधिक ज़ोर नहीं दिया।

सत्यशोधक समाज क्या था?

- ज्योतिबा फुले ने उच्च जाति के वर्चस्व और ब्राह्मणवादी वर्चस्व के खिलाफ एक शक्तिशाली आंदोलन का आयोजन किया।
- उन्होंने वर्ष 1873 में सत्यशोधक समाज (सत्य साधक समाज) की स्थापना की।
- आंदोलन के मुख्य उद्देश्य थे:
    - समाज सेवा।
    - महिलाओं और निचली जाति के लोगों के बीच शिक्षा का प्रसार।
- फुले की रचनाएँ, सार्वजनिक सत्यधर्म और गुलामगिरि आम जनता के लिये प्रेरणा स्रोत बने।
- फुले ने ब्राह्मणों के राम के प्रतीक के विपरीत राजा बलि के प्रतीक का इस्तेमाल किया।
- फुले का उद्देश्य जाति व्यवस्था और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को पूरी तरह से समाप्त करना था।
- इस आंदोलन ने दलित समुदायों के बीच ब्राह्मणों को एक ऐसे वर्ग के रूप में पेश किया जिन्हें शोषक के तौर पर देखा जाता था।

आर्य समाज आंदोलन क्या था?

- पश्चिमी प्रभावों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप आर्य समाज सुधारवादी न होकर पुनरुत्थानवादी था।
- पहली आर्य समाज इकाई औपचारिक रूप से दयानंद सरस्वती द्वारा वर्ष 1875 में बॉम्बे में स्थापित की गई थी और बाद में इसका मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया था।
- **आर्य समाज के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं:**
    - परमेश्वर सच्चे ज्ञान का प्राथमिक स्रोत है।
    - ईश्वर, सर्व-सत्य, सर्व-ज्ञान, सर्वशक्तिमान, अमर, ब्रह्मांड का निर्माता, पूजा के योग्य है।
    - वेद सच्चे ज्ञान के ग्रंथ हैं।
    - एक आर्य को हमेशा सत्य को स्वीकार करने और असत्य को त्यागने के लिये तैयार रहना चाहिये।
    - धर्म अर्थात् सही और गलत का उचित विचार, सभी कार्यों का मार्गदर्शक सिद्धांत होना चाहिये।
    - समाज का मुख्य उद्देश्य भौतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक अर्थों में दुनिया की भलाई को बढ़ावा देना है।
    - सभी के साथ प्रेम और न्याय का व्यवहार किया जाना चाहिये।
    - अज्ञान को दूर करना और ज्ञान को बढ़ाना।
    - स्वयं की प्रगति अन्य सभी के उत्थान पर निर्भर होनी चाहिये।
    - मानव जाति के सामाजिक कल्याण को व्यक्ति की भलाई से ऊपर रखा जाना चाहिये।
- इस आंदोलन का केंद्र दयानंद एंग्लो-वैदिक (डीएवी) स्कूल था जो पहली बार वर्ष 1886 में लाहौर में स्थापित किया गया था। इसने पश्चिमी शिक्षा के महत्त्व पर जोर देने की मांग की थी।
- आर्य समाज हिंदुओं में आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास जगाने में सक्षम था जिसने गोरों की श्रेष्ठता और पश्चिमी संस्कृति के मिथक को कमज़ोर करने में मदद की।
- आर्य समाज ने ईसाई और इस्लाम में धर्मान्तरित लोगों को हिंदू धर्म में वापस लाने के लिये शुद्धि आंदोलन शुरू किया।
- इससे 1920 के दशक के दौरान सामाजिक जीवन का सांप्रदायिकरण बढ़ा और बाद में यह सांप्रदायिक राजनीतिक चेतना में बदल गया।
- स्वामी दयानंद की मृत्यु के बाद उनके कार्यों को लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय और स्वामी श्रद्धानंद ने आगे बढ़ाया।
- स्वामी दयानंद के विचार उनकी प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश (द ट्रू एक्सपोज़िशन) में प्रकाशित हुए थे।

यंग बंगाल मूवमेंट क्या था?

- यंग बंगाल मूवमेंट या युवा बंगाल आंदोलन कलकत्ता के हिंदू कॉलेज के विचारकों के नेतृत्व आयोजित आंदोलन था। इन विचारकों को डेरोजियन्स के नाम से भी जाना जाता था।
- यह नाम उन्हें उसी कॉलेज के एक शिक्षक हेनरी लुई विवियन डेरोजियो के नाम पर दिया गया था।
- डेरोजियो ने अपने शिक्षण के माध्यम से और साहित्य, दर्शन, इतिहास तथा विज्ञान पर बहस व चर्चा के लिये एक संघ का आयोजन करके अपने विचारों को बढ़ावा दिया।
- उन्होंने फ्राँसीसी क्रांति (वर्ष 1789 ई.) के आदर्शों और ब्रिटेन की उदारवादी सोच को विस्तारित करने का प्रयास किया।
- डेरोजियन्स ने भी महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा का समर्थन किया।
- उनकी सीमित सफलता का मुख्य कारण उस समय की प्रचलित सामाजिक स्थिति थी, जो इन विचारों को अपनाने के लिये परिपक्व नहीं थी।
- इसके अलावा किसी अन्य सामाजिक समूह या वर्ग से समर्थन न मिलना था।
- उदाहरण के लिये डेरोजियन्स का जनता के साथ कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था, वे किसानों के मुद्दे को उठाने में विफल रहे।
- वास्तव में उनके विचार क्रांतिकारी थे लेकिन अपनी सीमाओं के बावजूद डेरोजियन्स ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सवालों पर राय की सार्वजनिक शिक्षा की परंपरा को आगे बढ़ाया।

रामकृष्ण आंदोलन क्या था?

- रामकृष्ण परमहंस एक रहस्यवादी थे जिन्होंने त्याग, ध्यान और भक्ति के पारंपरिक तरीकों से धार्मिक मुक्ति मांगी।
- वह एक ऐसे संत थे जिन्होंने सभी धर्मों की मौलिक एकता को पहचाना और इस बात पर ज़ोर दिया कि ईश्वर और मोक्ष प्राप्ति के कई रास्ते हैं तथा मनुष्य की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।
- रामकृष्ण परमहंस के शिक्षण ने रामकृष्ण आंदोलन का आधार निर्मित किया।
- **आंदोलन के दो उद्देश्य थे:**
    - त्याग और व्यावहारिक आध्यात्मिक जीवन के लिये समर्पित संतों के समूह को एक साथ लाना, जिनमें शिक्षकों और कार्यकर्ताओं को रामकृष्ण के जीवन के बारे में सचित्र वेदांत के सार्वभौमिक संदेश को फैलाने के लिये भेजा जाता था।
    - सामान्य शिष्यों के साथ मिलकर सभी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को, चाहे वे किसी भी जाति, पंथ या वर्ण के हों, ईश्वर की वास्तविक अभिव्यक्ति के रूप में उपदेश, परोपकारी और धर्मार्थ कार्यों को जारी रखने के लिये।
- स्वामी विवेकानंद ने वर्ष 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका नाम उनके गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के नाम पर रखा गया। इस संस्था ने भारत में व्यापक स्तर पर शैक्षिक और परोपकारी कार्य किये।
- स्वामी विवेकानंद ने वर्ष 1893 में शिकागो (यू.एस.) में आयोजित पहली धर्म संसद में भारत का प्रतिनिधित्व किया।
- उन्होंने मानवीय राहत और सामाजिक कार्यों के लिये रामकृष्ण मिशन का इस्तेमाल किया।
- मिशन अब भी धार्मिक और सामाजिक सुधार के लिये प्रतिबद्ध है। विवेकानंद ने सेवा के सिद्धांत-सभी प्राणियों की सेवा की वकालत की।
- उनका कहना था कि नर की सेवा (जीवित वस्तुओं) ही नारायण की पूजा है। जीवन ही धर्म है।
- सेवा से ही मनुष्य के भीतर परमात्मा विद्यमान रहता है। विवेकानंद मानव जाति की सेवा में प्रौद्योगिकी और आधुनिक विज्ञान के उपयोग के पक्षधर थे।

मुख्य परीक्षा हेतु प्रश्न

प्रश्न. 19वीं शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधारों का स्वरूप क्या था तथा उन्होंने भारत में राष्ट्रीय जागृति में कैसे योगदान दिया?

प्रश्न. भारतीय पुनर्जागरण की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें?

प्रश्न. रामकृष्ण ने किस तरह से हिंदू धर्म में एक नया जोश और गत्यात्मकता का संचार किया?

प्रारंभिक परीक्षा हेतु प्रश्न

प्रश्न.. राजा राम मोहन राय के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

1. वह अंतर्जातीय विवाह के विरोधी थे।
2. उन्होंने 'तर्क' व 'वेद और उपनिषद' के जुड़वाँ स्तंभों पर आधारित एक नए धार्मिक समाज की स्थापना की।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) 1 और 2 दोनों
(D) न तो 1 और न ही 2

प्रश्न. आर्य समाज के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. यह वेदों की अखंडता में विश्वास करता है और उन्हें एकमात्र सत्य और सभी ज्ञान के स्रोत के रूप में मानता है।
2. इसने हिंदुओं के आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन में ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को स्वीकार किया।
3. इसने उन लोगों को हिंदू धर्म में वापस लाने के लिये शुद्धिआंदोलन शुरू किया जो ईसाई और इस्लाम में परिवर्तित हो गए थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 3
(C) केवल 2 और 3
(D) 1, 2 और 3

प्रश्न. सत्य शोधक समाज का संबंध किस आंदोलन से था?

(A) बिहार में आदिवासियों के उत्थान के लिये एक आंदोलन
(B) गुजरात में एक मंदिर-प्रवेश आंदोलन
(C) महाराष्ट्र में एक जाति-विरोधी आंदोलन
(D) पंजाब में एक किसान आंदोलन

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/socio-religious-reform-movements-part-i